(1) Lecture Series No:- 92.

Online class.
Date - 28/7/2020
Day - Tuesday.
Time - 10:00 to 10:50 AM

Topic.

Dr. Surita Kumari
Depart. of Philosophy,
B.A Part - I
Paper - (5.)
A.N.D. College Shahpur Patory,
Samastipur.

(1) Buddhism

Ans:- महात्मा बुद्ध ने बुद्धत्व की प्राप्ति के बाद सर्वप्रथम काशी के निकट सारनाथ में अपना प्रवचन दिया जिसका संकलन धर्म - चक्र प्रवर्तन सूत्र में मिलता है। यही पर इन्होंने चार आर्य (सत्य) तत्वों का अमृत संदेश मानव को दिया इनके, इन्ही चार आर्य सत्यों में इनके सिद्धान्त का सारांश निहित है। इन चार आर्य सत्यों में प्रथम दुःख के स्वरूप तथा दूसरा आर्य सत्य दुःख के कारणों का विवेचन उपस्थित करते है। महात्मा बुद्ध के अनुसार संसार का समस्त कार्य - व्यापार दुःखमय है। मानव तथा मानवेतर जीवन सभी दुःख

P.T.O.

से परिपूर्ण है। सर्वम दुःख

जन्म जरा, रोग मृत्यु, शोक,

~~कर्मेरा - आशंका नैराश्य~~

~~सभी - आशक्ति से उत्पन्न है~~

आशंका :-

नैराश्य से आसक्ति से उत्पन्न हैं।

अतः ये सभी दुःख है। इसके

अतिरिक्त वे सभी बातें भी दुःख हैं।

जिन्हें हम सुख मानते हैं। विषय

भोग, इन्द्रिय सुख - ऐश्वर्य, विलास,

मान - सम्मान सन्तति, धन सभी दुःख

है। क्योंकि ये आसक्ति से

उत्पन्न होते हैं। संक्षेप में उन्होंने

रूप (Body), वेदना (Feeling),

संज्ञा, संस्कार और विज्ञान (Reason)

इन पाँचों उपादान स्कंधों को

दुःख कहा है। पाँचों स्कंधों का

ज्ञान प्रथम आर्य सत्य का ज्ञान है

पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि
चारों महाभूत (रूप) कहलाते हैं।

वस्तुओं के संसर्ग में
आने पर सुख या दुःख की
जो अनुभूति होती है, उसे वेदना
कहते हैं।

रूपों और संस्कारों का
जो प्रतिबिम्ब हमारे मन में बना
रहता है, उसका नाम संज्ञा।

विज्ञान संस्कारों के कारण
हमारे मन में जो यह वही वस्तु
है, का भाव उत्पन्न होता है
उसी को संज्ञा कहते हैं। चेतना
या मन ही विज्ञान कहलाता है।
जब पंचस्कन्ध ही दुःख
है तो समस्त संसार को ही

दुःखमय कहा गया।
दुःख को अपने उपदेशों का मूल
आधार मानने के कारण ही
बौद्धमत को निराशावादी कहते हैं।

"END"